वैशाली जिला में पर्यटन की संभावनाएँ एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ० अलका अपर्णा
एम०ए०, पीएच०डी०
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग,
बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

परिचय

वैशाली बिहार प्रान्त के तिरहुत प्रमण्डल का एक जिला है। मुजफ्फरपुर से अलग होकर 12 अक्टूबर 1972 को वैशाली एक अलग जिला बना। वैशाली जिले का मुख्यालय हाजीपुर में है। बज्जिका तथा हिन्दी यहाँ की मुख्य भाषा है। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार वैशाली में ही विश्व का सबसे पहला गणतंत्र यानि 'रिपब्लिक' कायम किया गया था। वैशाली जिला भगवान महावीर की जन्म स्थली होने के कारण जैन धर्म के मतावलम्बियों के लिए एक पवित्र नगरी है। भगवान बुद्ध का इस धरती पर तीन बार आगमन हुआ। भगवान बुद्ध के समय सोलह महाजनपदों में वैशाली का स्थान मगध के समान महत्वपूर्ण था। ऐतिहासिक महत्व के होने के अलावे आज यह जिला राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थानों तथा केले, आम और लीची के उत्पादन के लिए भी जाना जाता है।

वैशाली जिले का इतिहास

लिच्छिवियों (6ठीं सदी ई. पू. – 5वीं सदी ई.) का प्रसिद्ध गणराज्य वैशाली – 'बौद्ध' एवं 'जैन' के अनुयायियों के लिये अति महत्वपूर्ण स्थल है। लंबे समय से यह स्थान 'मुस्लिम संतों' का भी प्रिय स्थल रहा है। आज यहाँ जितने मजार हैं उतना दूसरे किसी जिले में नहीं है। इस पवित्र भूभाग में, पौराणिक, ऐतिहासिक कई हिन्दू धर्मिक स्थलें हैं – जो राष्ट्रीय महत्व के हैं। चार धर्मो का संगम है यह स्थल। पुरातात्विक दृष्टि से भी यह क्षेत्र अतिविशिष्ट माना जाता है।

रामायण काल में हिन्दू धर्मग्रंथ रामायण में वर्णित राजा विशाल का विशाल राज्य 'विशालापुरी' का संबंध इसी भूभाग से जोड़ा गया है। मिथिला की प्राचीन भूमि का केन्द्र रहा है – वैशाली। वैदिक साहित्य में इस क्षेत्रा के लिये 'विदेह' का उल्लेख किया गया है। उस समय बिहार का गंगा से उत्तर का भाग विदेह व दक्षिण का भाग मगध के नाम से जाना जाता था। विदेह राज्य को 'तीरभुक्ति' के नाम से जाना जाता है। जिसका वर्तमान रूप तिरहुत आज भी प्रचलित है।

6ठी सदी ई. पू. में भारत के 16 महाजनपदों (राज्यों) में से एक वज्जी था – जिसका राजधनी वैशाली था। इतिहासकारों ने यहाँ के 'वज्जी संघ' को विश्व का प्राचीनतम गणतंत्रा माना है। 6 सदी ई.पू. में जब पूरा विश्व 'जनतांत्रिक शासन प्रणाली' से अनभिज्ञ था – उस समय वैशाली में प्रजातंत्र की विकसित अवस्था का सफल संचालन हो रहा था। यहां का संसद चुनाव आधारित सर्वमताधिकार–संस्था था। प्रशासन के सभी तंत्रों के लिये अनुशासित और कठोर आचार संहिताएं निर्धारित थी। इतिहास में यहां के स्वर्णिम अतीत और महान परंपराओं के लिये वैशाली की अलग पहचान है। लिच्छिवियों की गणतांत्रिक शासन व्यवस्था यहां सैकड़ों वर्षों तक चली। गंगा के दक्षिणी भाग में बसा पाटलिपुत्र, उत्तर भारत का महत्वपूर्ण राजनीतिक केन्द्र रहा और वैशाली व्यापार व उद्योग का प्रमुख कन्द्र बना।

बौद्ध काल (6ठी–7वीं सदी ई.पू.) कुषाणकाल (2री सदी ई.पू.–1ली सदी ई.) मौर्यकाल (4थी सदी ई.पू.–2री सदी ई.) गुप्तकाल (4थी सदी – 6ठी सदी ई.), पालकाल (8वीं – 12वीं सदी ई.) तक यह भूभाग–इतिहास प्रसिद्ध सम्राटों का शासन क्षेत्र रहा है। गुप्तकाल में (320 ई. से 550 ई.) 'तीरभुक्ति प्रदेश' का वैशाली में मुख्यालय था।

प्राचीन वैशाली – बौद्ध, जैन, हिन्दू व मुस्लिम धर्मावलंबियों के लिये महत्वपूर्ण स्थल रहा है। भगवान बुद्ध ने अपने परिनिर्वाण की घोषणा यही की थी। गौतम बुद्ध वैशाली कई बार आये और यहां निवास किया। यहां के 'कूटागारशाला' में उनका उपदेश होता था। दूर–दूर तक प्रसिद्ध, सौंदर्य का प्रतीक – राजनर्तकी आम्रपाली ने भगवान बुद्ध से यही बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी। परिनिर्वाण (543 ई.पू.) के बाद गौतम बुद्ध के पवित्र अस्थि–अवशेष को पत्थर के एक घड़े में कुशीनगर से वैशाली लाकर यहां लिच्छवी स्तूप (वर्तमान में अस्थि कलश स्थल) में रखा गया था। जिसे भारत का सबसे 'आरंभिक स्तूप' माना गया है। (स्तूप का अस्थि कलश – आज पटना म्युजियम में संग्रहित है)।

इसके अलावा वैशाली को जैन धर्म के अंतिम 24वें तीर्थकर वर्द्धमान महावीर की (524 ई.पू.) पवित्र जन्मस्थली के रूप में याद किया जाता है। महावीर ने अपने बाल्यजीवन के 22 वर्ष यहां बिताने के बाद, जीवन की सुख सुविधाओं को त्यागकर – तपस्वी का जीवन आरंभ किया था। चैत्र माह के 13वें दिन को महावीर के जन्मदिवस पर यहाँ 'वैशाली महोत्सव' का बड़े पैमाने पर आयोजन होता है।

इतिहासकारों के अनुसार, वैशाली के गौरव व महत्व पर, 5वीं और 7वीं सदी में 'भारत दर्शन' के क्रम में क्रमशः फाहियान (405 ई. – 411 ई.) और हेनसांग (629 ई. – 645 ई.) वैशाली आये थे, जिन्होंने अपनी यात्राा–कथा में वैशाली का अत्यन्त महत्वपूर्ण और सारगर्भित वर्णन किया है। वैशाली में अबतक छह बार (सन् 1861–64, 1903–04, 1913–14, 1950, 1958, 1976 ई.) खुदाई हो चुकी है। प्रथम तीन खुदाई में प्राप्त वस्तुएं कलकत्ता संग्रहालय भेजा गया था तथा बाद में प्राप्त वस्तुएं पटना संग्राहालय व वैशाली म्यूजियम में संगृहीत है।

वैशाली जिला का भौगोलिक अध्ययन

वैशाली जिला का क्षेत्रफल 2036 वर्ग किलोमीटर है, जिसका समुद्र तल से औसत ऊँचाई 52 मीटर है। गंगा, गंडक, बया, नून यहाँ की नदियाँ हैं। गंगा तथा गंडक क्रमशः जिले की दक्षिणी एवं पश्चिमी सीमा बनाती है। वैशाली जिला के उत्तर में मुजफ्फरपुर, दक्षिण में पटना, पूर्व में समस्तीपुर तथा पश्चिम में सारन जिला है।

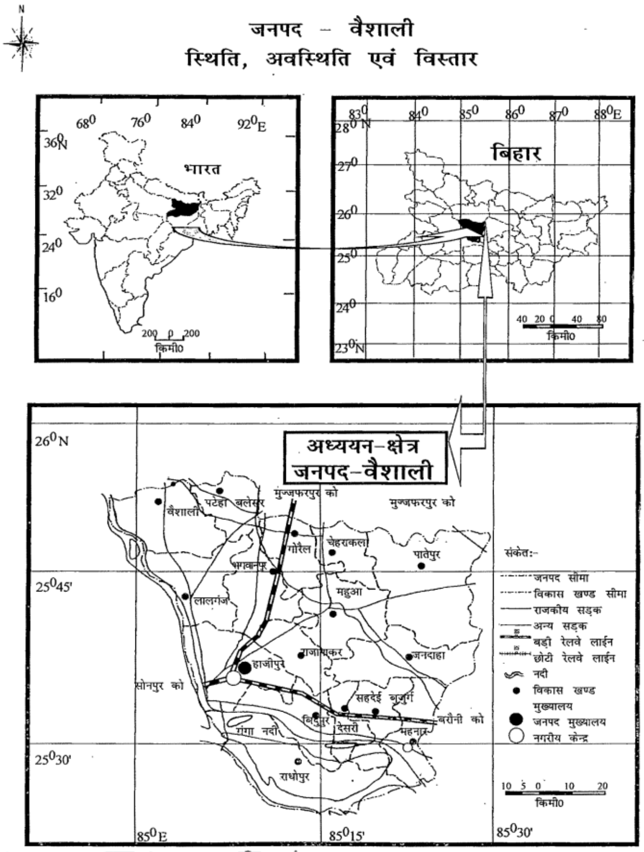

जलवायु

वैशाली जिले में नवम्बर से फरवरी तक शीत ऋतु, मार्च से जून तक ग्रीष्म ऋतु तथा जुलाई से सितम्बर तक वर्षा ऋतु होता है। वसंत काल (फरवरी–मार्च) तथा शरद काल (सितम्बर–अक्टूबर) सबसे सुखद होता है। गर्मियों में यहाँ का तापमान 44 डिग्री सेल्सियस से 21 डिग्री सेल्सियस के बीच तथा जाड़े में 23 डिग्री सेल्सियस से 6 डिग्री सेल्सियस के बीच बदलता रहता है। गर्मियों में 'लू' तथा जाड़ों में 'शीतलहरी' का चलना आम है। सर्दियों की सुबह एवं गरमी की शाम सुकून देने वाला होता है। छठ को शीत ऋतु का और होली पर्व को गर्मी का आरम्भ माना जाता है। मौसम सालाना औसत वर्षा 120 से.मी. होती है, जिसका अधिकांश मॉनसूनी महीनों (जून मध्य से अगस्त) में प्राप्त होता है।

जनसांख्यिकी

वैशाली जिले की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 3,495,021 है, जिसमें पुरूष की कुल जसंख्या 1,844,535 है तथा महिलाओं की कुल जनसंख्या 1,650,486 है। जनसंख्या घनत्व को देखें तो यहाँ 1335 प्रति वर्ग किलोमीटर है। स्त्री–पुरूष अनुपात 895 प्रति 1000 है तथा साक्षरता दर 66.60 प्रतिशत है।

इस जिले में 3 अनुमंडल, 16 प्रखंड, 291 ग्राम पंचायत तथा 1638 गाँवों में बँटा है। अपराध नियंत्राण के लिए जिले में 22 थाने तथा 6 सुरक्षा चौकी है। जिले के तीन शहरों में से एक हाजीपुर में नगर परिषद तथा महनार एवं महुआ में नगर पंचायत गठित है। लोकसभा के नये परिसीमन के मुताबिक वैशाली में दो सीटें हैं। विधन सभा क्षेत्र की जिले में पूर्ण तथा आंशिक रूप से 8 सीटें पड़ती है। कृषि एवं उद्योग को देखें तो वैशाली जिले की मुख्य कृषि गेहूँ, चावल और मक्का है।

मानव बसाव

समूचा वैशाली जिला गंगा के उत्तरी मैदान का हिस्सा है। कृषि योग्य उर्वर भूमि और मृदु जलवायु के चलते प्राचीन काल से ही यह स्थान सघन आबादी का क्षेत्र रहा है। जिले में जनसंख्या का घनत्व (1335) राष्ट्रीय औसत से काफी उपर तथा बिहार में तीसरा सबसे सघन है। महत्वपूर्ण सामरिक अवस्थिति के चलते अतीत में बाहरी लोगों के आकर बसने से यहाँ मिली–जुली स्थानीय संस्कृति पनपी है। प्रायः सभी गाँवों में हिन्दू और मुसलमान बसते हैं। दोनों समुदाय यहाँ के गौरवशाली अतीत और आपसी सहिष्णुता पर नाज करते हैं। बिहार की राजधानी पटना से जुड़ाव और भूगोलीय निकटता ने यहाँ की घटनाओं और अवसरों के महत्व को कई गुणा बढ़ा दिया है।

बोलचाल एवं पहनावा

हिन्दी जिले में शिक्षा का माध्यम तथा प्रमुख भाषा है, किन्तु बज्जिका यहाँ के स्थानीय बोली है, जो मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर और समस्तीपुर के अतिरिक्त नेपाल से सर्लाही जिला में भी बोली जाती है। युवक और युवतियाँ सभी आधुनिक भारतीय वस्त्र पहनते हैं लेकिन गाँव में रहनेवाले अधिकांश व्यस्क स्त्री–पुरूष धोती या साड़ी पहनना ही पसन्द करते हैं।

शादी विवाह

वैशाली की स्थानीय संस्कृति तिरहुत के अन्य जिलों (मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण) के समान है लेकिन पर्व–त्योहारों या विवाह के समय गाये जाने वाला गीत मिथिला से प्रभावित है। स्थानीय लोगों में जातिभेद अधिक है इसलिए शादी–विवाह अपने समूह में पारिवारिक कुटुम्ब या रिस्तेदार द्वारा तय किये जाते हैं। सभी समुदायों में शादी के समय दहेज लेना–देना आम है।

यातायात व्यवस्था

सड़क परिवहन

पटना, समस्तीपुर, छपरा तथा मुजफ्फरपुर से यहाँ आने के लिए सड़क या रेल मार्ग सबसे उपर्युक्त है। जिले से वर्तमान में तीन राष्ट्रीय राजमार्ग तथा दो राजकीय राजमार्ग गुजरती है। महात्मा गाँधी सेतु पार कर पटना से जुड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग 19 हाजीपुर, छपरा होकर उत्तर प्रदेश के गाजीपुर तक जाती है। हाजीपुर से मुजफ्फरपुर तथा सीतामढ़ी होकर सोनबरसा तक जानेवाली 142 किलोमीटर लम्बी सड़क राष्ट्रीय राजमार्ग 77 है। राष्ट्रीय राजमार्ग 103 हाजीपुर, चकसिकन्दर, जन्दाहा, चकलालशाही होते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग 28 पर स्थित मुसरीघरारी से जोड़ती है। राजकीय राजमार्ग 49 द्वारा यह महुआ तथा ताजपुर से जुड़ा है। राजकीय राजमार्ग 48 के अन्तर्गत 1.80 किलोमीटर का एक छोटा सा हिस्सा मुजफ्फरपुर–हाजीपुर सड़क का खंड है। राजमार्ग के अतिरिक्त वैशाली के सभी प्रखंड तथा पंचायत जिला उच्चपथ तथा ग्रामीण सड़कों से जुड़ा है। जिले का सार्वजनिक यातायात मुख्यतः निजी बसों, ऑटोरिक्शा और निजी वाहनों पर आश्रित है।

रेल परिवहन

वैशाली जिले में रेल पथ (ब्रॉड गेज) की कुल लम्बाई 71 किलोमीटर है। मुख्य स्टेशन हाजीपुर है जो पूर्व मध्य रेलवे का मुख्यालय भी है। वैशाली जिले में पड़ने वाले अन्य महत्वपूर्ण स्टेशन गोरौल, भगवानपुर, सराय, अक्षयवटराय नगर, चकसिकन्दर, देसरी तथा महनार है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई कोलकाता, गुवाहाटी तथा अमृतसर के अतिरिक्त भारत के महत्वपूर्ण शहरों के लिए यहाँ से सीधे ट्रेन सेवा है। बौद्ध सर्किट के तहत एक नयी रेल लाईन पटना से हाजीपुर, वैशाली होकर प्रस्तावित है।

हवाई परिवहन

वैशाली जिले का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा राज्य की राजधनी पटना में स्थित है। जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई क्षेत्र के लिए इंडियन, स्पाइस जेट, जेललाइट, इंडिगो आदि विमान सेवाएँ उपलब्ध हैं। दिल्ली, कोलकाता, काठमांडु, बागडोगरा, राँची, बनारस और लखनउ से फ्लाइट लेकर पटना पहुँच कर वैशाली के किसी भी हिस्से में आसानी से पहुँचा जा सकता है। पटना हवाई अड्डे से सड़क मार्ग द्वारा महात्मा गाँधी सेतु पार कर वैशाली जिले में प्रवेश होते हैं।

वैशाली जिला के के प्रमुख पर्यटन स्थल

बुद्ध अस्थिकलश स्थल (लिच्छवी स्तूप) :

लोकेशन :– हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर प्राचीन वैशाली क अभिषेक पुष्करिणी के दाहिने सटे उत्तर, प्रसिद्ध 'बुद्ध अस्थिकलश स्थल' है।

महत्व :– इस स्थल को 'धतु स्तूप परिसर' के नाम से भी जाना जाता है – जहां वर्ष 1958–62 की खुदाई में भगवान बुद्ध का अस्थिकलश मिला था, जो 1972 ई. से पटना म्युजियम में संगृहीत है। वैशाली स्थित यह स्तूप भगवान बुद्ध के धतु अवशेष पर बने ;आठद्ध मूल स्तूपों में से एक है। यहां से उत्खनन में 'सोप स्टोन' द्वारा मिर्नित बुद्ध अस्थि–अवशेष मंजूषा (कैसकेट) मिला। इसके साथ शंख का एक टुकड़ा, मनके, सोने के पत्तर का टुकड़ा व तांबे का एक आहत टुकड़ा (पंचमार्क क्वाइन) भी प्राप्त हुआ था।

यह स्तूप 5वीं सदी ई.पू. में निर्मित 8.07 मीटर व्यास वाला मिट्टी का छोटा सा स्तूप था। जिसका बाद के वर्षों में मौर्य, शुंग, कुषाण कालों में, पक्की ईंटों से निर्माण कर (जिसे तीन सतहों में आज भी देखा जा सकता है) इसके आकार व उँचाई में परिवर्तन किया गया।

उत्खनन में प्राप्त जानकारी के अनुसार, इस स्तूप का तीन बार बिस्तार (पुनरूद्धार) हुआ है और प्रत्येक बार पकी हुई ईंटों का प्रयोग हुआ है। इस स्तूप के चारो दिशाओं में आयकनुमा भाग आगे निकला है, यह विशेषता कृष्णा नदी घाटी के निचले भाग से प्राप्त स्तूपों में मिलता है और दक्षिण भारतीय स्तूपों की विशेषताओं में प्रमुख है।

40 फीट व्यास से अधिक यह वही स्तूप है जो लिच्छवियों ने गौतम बुद्ध के अवशेषों के अपने अंश पर बनवाया था। इसके साथ इसके मध्य में स्थित खंभा वाला स्थान स्पष्ट दिखाई देता है, जो अवशेषों तक पहुँचने के लिए सम्राट अशोक ने स्तूप के मध्य में, बाद में घुसाया था।

चीनी यात्री हेनसांग के अनुसार, सम्राट अशोक ने कुछ भाग अपनी मूल अवस्था में छोड़ शेष को यहां से निकाल लिया था। यह स्तूप अवतब खोजे गये स्तूपों में सबसे प्राचीन व महत्वपूर्ण स्तूप है और इस 'अस्थि–कलश अवशेष स्थल' को मूल रूप में देखा जा सकता है।

इस स्थल को पुरातात्विक सर्वेक्षण तथा स्मारक अधिनियम 1958(24) के अंतर्गत 'राष्ट्रीय महत्व' का घोषित किया गया है।

प्राचीन कुँआ :– अस्थि–कलश स्थल के उत्तर एक प्राचीन कुँआ है। कुँआ डेढ़ फीट लंबी चन्द्रकार पकी व पालिश की बनी है। कुआ नीचे से भर चुका है। सिर्फ उपर से 10–12 फीट की गहराई तक ही सलामत है। काल निर्धारण के लिए इस स्थल के पुरातात्विक सर्वेक्षण की जरूरत है।

अशोककालीन स्तूप :–

मूल अस्थि अवशेषों से तीसरा ऐतिहासिक तथ्य भी जुड़ा है कि भगवान के महापरिनिर्वाण (543 ईसा पूर्व) के बाद, 270 वर्ष के बाद, सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल (273 ई.पू. – 329 ई.पू.) में भगवान बुद्ध के आठ मूल अस्थि अवशेषों को आठ स्थानों में से रामग्राम के कोलिय (नेपाल) को छोड़कर, 7 स्थलों में स्थित बौद्ध स्तूपों (मगध साम्राज्य के राजगीर स्थित 'अजातशत्रु स्तूप' से, कुशीनारा के मल्ल गणराज्य में 'मल्ल बौद्ध स्तूपों' (उ.प्र./सारण स्थित) से, वेठदीप के ब्राह्मण द्वारा (बेतिया में) स्थापित 'मूल बौद्ध स्तूप' से, अल्लकप्प के बुलियों द्वारा (सारण में) स्थापित 'मूल बौद्ध स्तूप' से और शाक्य गणराज्य के द्वारा (उ.प्र. में) स्थापित मूल बौद्ध स्तूप से) में से भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेषों के अधिकांश भाग को निकलवाकर और उसे फिर 84,000 भागों में बांटकर भगवान के 'निर्वाण पथ' पर 84000 स्थलों पर 'बौद्ध स्तूपों/बौद्ध स्तंभों – की स्थापना किया था। इसमें से अधिकांश बौद्ध स्तूप 2500 वर्ष के कालखंडों में लुप्त (क्योंकि अशोक कालीन अधिकांश स्तूप मिट्टी के बने थे) हो गये।

वर्तमान में बिहार में 4 अशोककालीन बौद्ध स्तूप (बौद्ध स्तूप, लौरिया अरेराज, पू. चम्पारण में, अशोक स्तूप, रामपुरवा, पं. चंपारण में, अशोक स्तूप (नये राजगीर से पश्चिम, सरस्वती नदी के पार) में, चकरमदास स्तूप, वैशाली में) हैं। जिनका भग्नावशेष आज भी देखा जा सकता है।

अन्य प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप :

इसके अलावा भगवान बुद्ध की स्मृति में अशोककाल से लेकर पालकाल के कई सम्राटों (1ली सदी ई.पू. से 2री सदी ई.तकc ने 'बौद्ध स्तूपों' की स्थापना की थी जो आज भी बिहार में देखे जा सकते हैं। (आज ये विकसित/अविकसित पर्यटक स्थल हैं) जिनमें 1. कोल्हुआ बौद्ध स्तूप, कोल्हुआ वैशाली में (भगवान बुद्ध के मुख्य शिष्य आनंद की स्मृति में), 2. आम्रपाली स्तूप, वैशाली (उनकी शिष्या व प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली की स्मृति में), 3. सुजाता स्तूप (भगवान के निर्वाण के पूर्व एक महत्वपूर्ण घटना की स्मृति में), बोधगया में, 4. नालंदा विश्वविद्यालय परिसर स्थित सारिपुत्र बौद्ध स्तूप (भगवान बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र के स्मृति में), 5. अजातशत्रु बौद्ध स्तूप, राजगीर, नालन्दा में (भगवान बुद्ध के मुख्य शिष्य आनंद की स्मृति में), 6. केसरिया बौद्ध स्तूप, पू. चम्पारण (जहां लिच्छवी गणराज्य द्वारा वैशाली स्थिति लिच्छवी स्तूप के बाद – भगवान बुद्ध से जुड़ी एक महत्वपूर्ण घटना की स्मृति में।

इसके बलावा दो नवनिर्मित्त बौद्ध स्तूप विश्व शांति स्तूप, वैशाली (सबसे उँचा बौद्ध स्तूप के रूप में) और विश्वशांति स्तूप, राजगीर, नालन्दा भी विशेष रूप से देखा जा सकता है।

विश्वशांति स्तूप :

लोकेशन : वैशाली स्थित अभिषेक पुष्करिणी के दक्षिण तट पर स्थित जापान बौद्ध भिक्षु संघ 'नेप्पोनजी म्योंहजी' द्वारा नवनिर्मित यह भारत का सर्वाधिक उँचा 'बौद्ध शांति स्तूप' है।
महत्व : इसकी उँचाई 146 फुट (आधरतल से) एवं परिधि 120 फुट है। दो तलवाले इस स्तूप पर चक्रदार भ्रमण करते हुए भगवान बुद्ध की चतुर्दिशा में स्थापित 'चार स्वर्ण मंडित कांच की मूर्तियों को देखा जा सकता है। शांति स्तूप का उद्‌घाटन 23 अक्टूबर 1996 ई. में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ0 शंकर दयाल शर्मा ने किया था।

अशोक स्तंभ, कोल्हुआ :

लोकेशन : विश्वशांति स्तूप से 3.5 कि.मी. उत्तर–पश्चिम में स्थित कोल्हुआ – 'अशोक स्तंभ' के कारण प्रसि(है।
महत्व : पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र 'अशोक स्तंभ', 3री सदी ई. पू. (249 ई.पू.) में निर्मित, 25 फीट 4 इंच (तल से 43 फीट 5 इंच) उँचा, लाल बलुआही पत्थर का बना – मौर्यकाल का अद्‌भुत नमूना है।

इस अशोक स्तंभ के शीर्ष पर उत्तरमुखी (उत्तर की ओर मुंह किये) सिंह की आकृति है। इसकी सही पहचान होने के पहली स्थानीय ग्रामवासी इसे 'भीमसेन की लाठी' कहा करते थे। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 'सुरक्षित घोषित स्मारक' की सूची में रखा गया है। सम्राट अशोक ने कुछ ज्ञात 30 स्तंभ बनवाये थे – जिनमें से दस पर उनके उपदेश अंकित हैं। इन स्तंभों में से 5 बिहार में हैं – एक वैशाली में, दो रामपुरवा (चंपारण) में, एक अरेराज (चंपारण) में और एक लौरिया नंदनगढ़ (चंपारण) में। इनमें वैशाली और बेतिया, नंदनगढ़ वाला स्तंभ सबसे अच्छी स्थिति में है। बिहार में स्थित 5 अशोक स्तंभों में 'दो स्तंभों पर अभिलेख उत्कीर्ण है। पहला पं0 चम्पारण स्थित लौरियानंदनगढ़ अशोक स्तंभ और दूसरा पं0 चम्पारण स्थित रामपुरवा अशोक स्तंभ में (दो में से एक पर)।

आनन्द स्तूप : अशोक स्तंभ कोल्हुआ के निकट, आनंद का स्तूप स्थित है। यहां आनंद (भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य) का 'अर्द्धांग स्तूप' स्थापित है। (यानि आनंद के आधे अंग के अस्थि–अवशेष के उपर बना स्तूप)।

बौद्ध साहित्य के अनुसार, बुद्ध महापरिनिर्वाण (543 ई.पू./6ठी सदी ई.पू.) के बाद कुछ वर्ष बौद्ध धर्म और भिक्षु संघ की सेवा के बाद, आनंद ने वैशाली में निर्वाण प्राप्त करने की इच्छा से गंगा नदी के उस पार जाना चाहा। इसकी सूचना मिलने पर मगध सम्राट अजातशत्रु ने आकर उन्हें मगध में निर्वाण प्राप्त करने का आग्रह किया। तबतक लिच्छिवि भी गंगा के उस पार आ चुके थे। जिससे आनंद अपने 'इच्छित स्थान' पर निर्वाण प्राप्त कर सके। यह देख, आनंद ने दोनों राज्यों के बीच युद्ध रोकने के लिए योगबल से, गंगा के बीच, अपने शरीर को अग्नि को सौंप दिया। इस तरह आध अस्थि–अवशेष–लिच्छिवी गणराज्य को और आध अस्थि–अवशेष मगध साम्राज्य को मिला। लिच्छिवियों ने इस पवित्र आधे अस्थि अवशेष को कोल्हुआ, वैशाली में 'आनंद स्तूप' और अजातशत्रु ने बाकी आधे अस्थि–अवशेषों को राजगीर, नालंदा में 'आनंद स्तूप' की स्थापना की। बौद्ध साहित्य दिव्यावदान के अनुसार बाद में मगध सम्राट अशोक (3री सदी ई.पू.) ने कोल्हुआ, वैशाली स्थित आनंद स्तूप को 1 करोड़ स्वर्ण मुद्राएं खर्च कर इस स्तूप का पुनर्निमाण कराया था। फाहियान (405 ई. – 411 ई.) के अनुसार, उस समय इस स्थल पर अशोककालीन स्तंभ, आनंद स्तूप के अलावा 'महावन' में स्थित दो मंजिला कूटागारशाला (जहां बुद्ध ठहरते थे) – अच्छी स्थिति में थे। कूटागारशाला के सामने ही मरकट्हृद था।

आम्रपाली स्तूप/पीर का मजार

लोकेशन : जिला मुख्यालय हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर, राजा विशाल के गढ़ से दक्षिण–पश्चिम 300 मीटर की दूरी पर, वैशाली सदर के वैशाली पंचायत में 'टोला–दरगाह गांव' स्थित है– आम्रपाली स्तूप। यह स्तूप 24 फीट उंचा और आधर का व्यास 140 फीट है। उपर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है।

महत्व : यह स्थल आज 'पीर का मजार' (शेख काजिन सुत्तारी का कब्र) के रूप में जाना जाता है। प्राचीन आम्रपाली स्तूप पर हीं 15वीं सदी ई. में, इस मजार की स्थापना हुई। यहां 550 वर्षों से यह मजार स्थित है। इस तरह इस स्थल पर आम्रपाली स्तूप को लोगों ने भुला दिया। बौद्ध काल में इस स्थल पर आम्रवन था, जो मगध साम्राज्य की प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली के अधीन था। बौद्ध साहित्य 'महापरिनिब्बाणसुत्त' के अनुसार, भगवान बुद्ध जब अंतिम बार वैशाली आये थे और अपने महापरिनिर्वाण की घोषणा की थी। उस समय वे भिक्षुसंघ के साथ, राजगीर से चलकर वैशाली स्थित अम्बपाली (आम्रपाली) के आम्रवन में विश्राम के लिए ठहरे थे। फाहियान (405 ई. – 411 ई.) के अनुसार अपने यात्रा क्रम में वैशाली आने पर उन्होंने राजप्रसाद (राजा विशाल का गढ़) के दक्षिण–पश्चिम में, 3ली (लगभग 300 मीटर) पर आम्रपाली स्तूप को भग्नावशेष के रूप में देखा था। इस स्तूप पर आज हजरत मखदुम शाह काजिन (शेख काजिन सुतारी) का पवित्र मजार स्थापित है। मुस्लिम काल में शाह काजिन अजमेरशरीफ से, अरब से आये ख्वाजा गरीबनवाज, प्रसिद्ध फकीर के साथ आकर इस स्थल पर निवास किया और मुस्लिम धर्म का प्रचार किया था।

चकरमदास स्तूप

लोकेशन : जिला मुख्यालय हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर, अभिषेक पुष्करिणी के दक्षिण में थोड़ी दूर पर, चकरमदास गांव स्थित है। चक्रमणदास स्तूप (इस गांव के पश्चिम में लालपुरा गांव और दक्षिण में बौद्ध टोला गांव स्थित है)

महत्व : वैशाली प्रवास के दौरान भगवान बुद्ध इस स्थल पर चंक्रमण (टहला) करते थे। बौद्धकाल में यहां एक तालाब था। यह स्थान उन्हें बड़ा प्रिय था। इसके निकट 'चापाल चैत्य' था। जहां वे ठहरा करते थे। ह्नेनसांग (7वीं सदी ई.) में इस स्थान पर भगवान का 'स्मृति अवशेष' देखा था। ह्नेनसांग के अनुसार, भिक्षुसंघ को संबोधित करते हुए भगवान बुद्ध ने कहा था कि इस स्थल पर उन्होंने पिछले जन्म में अपनोर भाईयों के साथ, अपनी माता के दर्शन के बाद, अपने अस्त्रशस्त्र को त्याग कर दिया था। वे ही इस भद्रकल्प में सहस्रबुद्ध हैं। इसी कारण उन्हें यह स्थान प्रिय था। 'चकरमदास' वास्तव में चक्रमणहृद का ही अप्रभंश है। वैशाली में बौद्धकाल में बहुत से हृद (मर्कटहृद, पुष्कर, पोखर, पुष्करणी) थे। इस स्थल से 60 के दशक में के.पी.जयसवाल शोध संस्थान द्वारा हुए उत्खनन में कृष्ण–लोहित मृद्भांड एन.बी.पी.मृदभंडा, मिट्टी के मुहरें, हड्डी की शालाकाएं, अभिलेखयुक्त कांच के मुहर, रिंगबेल आदि मिले हैं। इस स्थल के पर्याप्त संरक्षण व विकास की आवश्यकता है।

चेचर ग्राम समूह

लोकेशन : जिला मुख्यालय हाजीपुर से 15 कि.मी. पूरब व फतुहा (पटना) से 13 कि.मी. उत्तर, गुंगा के उत्तरी तट पर बिंदुपुर थाना अन्तर्गत, महनार सड़कमार्ग पर स्थित चेचर ग्राम समूह विशिष्ट पुरातात्विक महत्व का क्षेत्र है। यह गंगा और गंडक के संगम पर बसा है। इसके समीप से सोन व पूर्व में गंडक नदियां प्रवाहित हैं।

महत्व : विश्व का प्राचीनतम सभ्यता का प्रती है यह ग्राम समूह। प्रमुख नदियों के समीप स्थित चेचर में नवपाषाण युग से लेकर आधुनिक कालखंडों के सांस्कृतिक सतहें मिली हैं, जो दुर्लभ हैं। माना जाता है कि सभ्यता व संस्कृति का यह महत्वपूर्ण भूखंड–भगवत पुराण, स्कंद 6 अध्याय 15 श्लोक 26–30 के अनुसार रामायण काल में यह स्थल 'मिथिला' के रूप में जाना जाता था। बौद्ध साहित्य 'महानिब्बाण सूतम' के अनुसार यह बौद्धकाल में 'कोटि ग्राम' के नाम से जाना जाता था। गुप्तकाल (320–550 ई.) में यह कोटिग्राम से बदलकर श्वेतपुर हो गया। चेचर ग्राम समूह की महत्ता की

जानकारी शेष जगत को 28 अक्टूबर 1976 को समाचार पत्र हिन्दूस्तान, दिल्ली से मिली। जब यहां श्री रामपुकार सिंह, समाजसेवी व प्रसिद्ध अन्वेषक को रिसर्च व उत्खनन के दौरान 495 (15 किलो) सोने के सिक्के (पंचमार्क) मिले थे (जो नेशनल म्युजियम दिल्ली में संगृहित है) आर्केलाजिकल सर्वे 1977–78 अंक–1, पृष्ठ–1 पर चेचर उत्खनन की रिपोर्ट दर्ज है। चेचर ग्राम समूह में 9 बौद्ध स्तूप (भिंड के रूप में) आज भी अस्तित्व में है – जिनमें 3 चेचर गांव में, 3 कुतुबपुर में, 1 बाजिदपुर में, 1 मधुरापुर में और 1 नवानगर में है। इसमें बाजिदपुर स्तूप 1.5 एकड़ क्षेत्र व्यास व 15 फीट उँचा (गौतम बुद्ध के प्रमुख शिष्य आनंद की स्मृति में बना) और मधुरापुर स्तूप (अशोककालीन) माना जाता है। इस स्तूपों के पर्याप्त अन्वेषण व संरक्षण की आवश्यकता है।

दीप नारायण सिंह म्युजियम, हाजीपुर

लोकेशन : वैशाली जिला मुख्यालय हाजीपुर शहर में 'गांधी आश्रम' परिसर स्थित – दीप नारायण सिंह म्युजियम – पुरातात्विक दृष्टि से राज्य के महत्वपूर्ण संग्रहालयों में एक है।

महत्व : म्युजियम में दुलर्भ पुरातात्विक वस्तुओं में गुप्तकालीन (4थी–6ठी सदी ई.) प्रस्तर खंड, 2री सदी ई. की हंसता बालक व बालिका की प्रतिकृत, (बुलन्दीबाग, पटना से प्राप्त), मध्यकालीन (10वीं–17वीं सदी ई.) के प्राचीन सिक्के, पूर्व मुख्यमंत्री स्व. दीपनारायण सिंह की दुलर्भ डायरी, वैशाली के स्वतंत्रता सेनानी के दुलर्भ चित्र आदि संग्रहित हैं।

संग्रहालय निदेशालय, बिहार सरकार ने वर्ष 1979 में गांधी आश्रम परिसर में 'दीप नारायण सिंह म्युजियम' की स्थापना की। पहले यह हाजीपुर संग्रहालय के नाम से जाना जाता था। (म्युजियम खुलने का समय 10.30 – 4.30 बजे तक/ सोमवार बंद)। इस परिसर में 'गांधी आश्रम' भी दर्शनीय है। यहीं से 'महात्मा गांधी' ने चंपारण यात्रा के क्रम में इस स्थल पर बिहार के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ प्रथम बार सभा कर इस आश्रम की नींव डाली थी। परिसर में यह प्राचीन कुंआ भी है – जहां महात्मा गांधी ने स्नान किया था। परिसर में एक पुस्तकालय व ठहरने के कमरे स्थित हैं।

वैशाली (आर्केलॉजिकल) म्युजियम

लोकेशन : वैशाली म्युजियम – जिला मुख्यालय हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर, अभिषेक पुष्करणी के निकट स्थित है।

महत्व : वैशाली स्थित आर्केलॉजिकल म्युजियम – पुरातात्विक दृष्टि से राज्य के अति महत्वपूर्ण संग्रहालयों में से एक है। यहां संगृहीत कई दुलर्भ पुरातात्विक वस्तुएं 3रीं सदी ई.पू. की हैं। प्रमुख वस्तुओं में मृण्मय पशु–पक्षी आकृतियां, मृण्मय मानव आकृतियों के अन्तर्गत मातृदेवी की मूर्ति, स्थानक बुद्ध पुरूष आकृति, मुद्राएं व मुद्रा छाप, पत्थर की आधारशिला, डेकोरेटेड डिस्क, टेराकोटा डिस्क, कृष्णमार्जित अलंकृत पात्र एवं सिंहवाहिनी विशेष रूप से संगृहित हैं।

राजा विशाल का गढ़

लोकेशन : वैशाली जिला मुख्यालय हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर (बसाढ़ गांव स्थित) विश्व शांति स्तूप के निकट, डेढ़ वर्ग कि.मी. में फैला राजा विशाल का गढ़ लिच्छिवियों (6सदी ई.पू. में) के राजनैतिक व्यवस्था का केन्द्र था।

महत्व : गढ़ 8 फूट उँचा व 1.5 कि.मी. की क्षेत्र में विस्तृत टीला है। देखने में किसी 'किले का भग्वावशेष' दिखता है। गढ़ की दीवारें 2 मीटर उँची तथा गढ़ के बाहर 45 मीटर चौड़ी खाई है। इस क्षेत्र के उत्खनन में विश्व के प्राचीनतम संसद भवन के गोलाकार खंडहरनुमा भग्नावशेष मिले हैं। इतिहासकारों के अनुसार इस विशाल संसद भवन में 7707 प्रतिनिधि एक साथ बैठते थे। इसके अलावा यहां से खुदाई में मृदभांड, टेराकोटा, पात्र एवं मुद्राएं मिली हैं। इस स्थल को तार के बारे से घेर कर पर्यटकों के लिये संरक्षित रखा गया है। वैशाली नामकरण के पीछे कई मान्यताएँ हैं, पहला – इस नगर की स्थापना विशाल नामक राजा द्वारा हुआ, दूसरा – रामायण काल में वर्णित सुप्रसिद्ध राजा इक्ष्वाकु की रानी अकम्बुसा के पुत्र विशाल ने इस नगर विशाल या वैशाली का निर्माण कराया था, तीसरा – वाल्मीकी रामायण में उल्लिखित सीता–स्वयंवर में जनकपुर जाते हुए राम–लक्ष्मण और विश्वामित्र एक रात के लिए यहां ठहरे थे। यह क्षेत्र भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 'सुरक्षित घोषित स्मारक' की सूची में शामिल है।

महावीर जन्मस्थली :

लोकेशन : वैशाली के हाजीपुर सबडिविजन के उत्तर–पश्चिम में स्थित, शहर से 30 कि0मी0 दूर, ऐतिहासिक 'प्राचीन कुंडग्राम' आज 'बासोकुंड गांव' के नाम से जाना जाता है। जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थकर महावीर (599–527 ई. पू) की जन्मभूमि के रूप में प्रसिद्ध है।

महत्व : माना जाता है कि महावीर ने अपने जीवन के 22 वर्ष यहां बिताये थे। इस कारण वैशाली – जैन सम्प्रदाय की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना। इस स्थान पर एक लघु घेरानुमा स्थल के अंतर्गत संगमरमर की एक पट्टिका लगी है जिसपर महावीर के जन्म का जीवन से संबंधित बातें खुदी हैं। जैन धर्म के श्वेताम्बर व दिगंबर अनुयायियों के अनुसार वर्द्धमान महावीर – वैशाली के प्राचीन उपनगर कुंडग्राम (कुंडपुर) – जो आज बासोकुंड के नाम से जाना जाता है – के निवासी सिद्धार्थ के पुत्र थे। कुंडग्राम गढ़टीला से 2 कि.मी. उत्तर–पूरब में स्थित है। इतिहासकारों के अनुसार वैशाली क्षेत्र में राज्य करनेवाले वज्जिगण के आठ वंशजों में ज्ञातृकवंश में वर्द्धमान महावीर का जन्म हुआ था। इस स्थल का शिलान्यास पूर्व राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने किया था।

जैन मंदिर, बावन पोखर :

लोकेशन : वैशाली के हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर वैशाली के बौना पोखर स्थित एक प्राचीन पोखर है।

महत्व : इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व है। 8वीं से 10वीं सदी ई. में बना बावन पोखर – एक लंबे काल से जैनियों–हिन्दुओं के लिये पवित्र स्थल रहा है। यहाँ से कुछ वर्ष पहले प्राप्त श्यामवर्ण की तीर्थकर महावीर की एक 22 इंची उँची अतिप्राचीन मूर्ति को पुराने मंदिर से स्थानांतरित कर (2007 ई. में 22.5 रू. से निर्मित) बावन पोखर के तट पर स्थित मंदिर परिसर में नवनिर्मित जैन मंदिर में स्थापित किया गया है। इसके पास ही तीर्थकर महावीर की, संगमरमर से बना, 93 वर्ग इंच का चरणचिन्ह भी दर्शनीय है। बावन पोखर से बड़ी संख्या में दुलर्भ बौद्धकालीन, मध्यकालीन मूर्तियां मिली है। माना जाता है कि यह पोखर – वैदिक काल में, राजा बलि के काल का है। आस्था है कि इस पोखर में 52 कुंआ था। जिसमें मुस्लिम आक्रमण के समय यहां स्थापित दुर्लभ मूर्तियों को नष्ट होने से बचाने के लिए डाल दिया गया। जो बाद में धीरे–धीरे उत्खनन में मिला। मंदिर परिसर में नवनिर्मित जैन मंदिर के बगल में 500 वर्ष प्राचीन भगवान शिव–पार्वती, विष्णु, गणेश की दुर्लभ मूर्तियां छोटे नवनिर्मित मंदिर में स्थापित है – जो दर्शनीय है। इस संबंध में वैशाली के लालगंज अन्तर्गत 'शारदा सदन' में प्राचीन पुस्तकों' में साक्ष्य उपलब्ध है। नवनिर्माण के पहले से, 1997 वर्ष से, यह प्राचीन पवित्र स्थल श्री मणिलाल जैन द्वारा पूजित है।

रामचौरा मंदिर :

लोकेशन : वैशाली जिलाअन्तर्गत हाजीपुर में गंगा नदी के तट पर स्थित 'रामचौरा मंदिर' पौराणिक धार्मिक महत्व का स्थल है।

महत्व : आस्था है कि भगवान राम, लक्ष्मण व विश्वामित्र ऋषि ने इसी स्थल से गुगा नदी पार किया था और यहां स्नान किया था। रामायण के अनुसार उन्होंने यही से गंगा नदी पार कर एक रात्रि विशाला नगरी में विश्राम किया था। पौराणिक काल में यह स्थल उपवन से हरा भरा था। चौरा का अर्थ उपवन है। संभवतः इसी कारण इस स्थल का नाम रामचौरा पड़ा। वर्तमान में इस मंदिर परिसर में उँचे टीले पर स्थित 'भगवान के चरण चिन्ह' के उपर नवनिर्मित छोटा मंदिर स्थापित है। टीले के बगल में प्राचीन शिवलिंग एक छोटे मंदिर में स्थापत है। यह मंदिर 'रामायण सर्किट' से जुड़ा है। परिसर का हाल में विकास हुआ है।

नेपाली मंदिर :

लोकेशन : पटना से 32 कि.मी. उत्तर, हाजीपुर स्टेशन से 3 कि.मी. की दूरी पर, गंगा और गंडक नदी के संगम स्थल पर, हाजीपुर के कोनहारा घाट स्थित प्राचीन व ऐतिहासिक नेपाली मंदिर प्रसिद्ध धार्मिक महत्व का स्थल है।

महत्व : अपने काष्ठ शिल्प के कारण यह मंदिर दूर–दूर तक प्रसिद्ध है। मंदिर के हरेक काष्ठ स्तंभ पर भिन्न–भिन्न देवताओं की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। कुछ अन्य आकर्षक आकृतियाँ भी 'खजुराहो मंदिर की शैली' में उत्कीर्ण है। मंदिर के भीतर प्राचीन शिवलिंग स्थापित था। खजुरिया ईट से बने इस मुंदिर के निर्माणकाल के बारे में विभिन्न मत है। लेकिन किसी भी दृष्टि से 2 सौ वर्ष से अध्कि प्राचीन है। प्राचीन शिवलिंग के चोरी चले जाने के बाद आज यहां नया शिवलिंग स्थापित है। नेपाल से जुड़े एक परिवार द्वारा बनवाये जाने के कारण यह प्रारंभ से ही 'नेपाली मंदिर' के नाम से जाना जाता है। दो मंजिला नेपाली मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा सुरक्षित घोषित स्मारक के रूप में संरक्षित है।

गौरीशंकर मंदिर :

लोकेशन : वैशाली जिलाअन्तर्गत हाजीपुर में महावीर चौक के निकट स्थित प्राचीन गौरीशंकर मंदिर धार्मिक महत्व का स्थल है।

महत्व : यहाँ ध्वस्त प्राचीन मंदिर के उपर भव्य नवनिर्मित मंदिर है। मंदिर में 10वीं सदी का शिवलिंग स्थापित है, जो इसी स्थल पर प्राचीन मंदिर में स्थित था। इस शिवलिंग में दक्षिण दिशा में देवी पार्वती का मुख संयुक्त है। अरघा पर अष्टदल कमल व मातृका बीजाक्षर उत्कीर्ण है। शिवलिंग के उपरी भाग में अष्टदल कमल का यंत्र है, जिसमें भूपुर और त्रिशूल दिखाई देता है। सभी लेख मिथिलाक्षर में है। इस शिवलिंग में भी मधुबनी के जमथरि स्थिति शिवमंदिर की तरह उत्कीर्ण अभिलेख उभरा हुआ है न कि खुदा हुआ। इस तरह के अभिलेख वाली मूर्तियां विरले ही है। शिवलिंग में देवी पार्वती के कानों के कर्णफूलों में 'रा' एवं 'म' अक्षर है। कालान्तर में इस शिवलिंग पर 'अन्नपूर्णा देवी' का भी मंत्र लिखा गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह शिवलिंग गवेषणीय है। स्थानीय लोग इसकी महत्ता से अनभिज्ञ है।

विशालनाथ शिवमंदिर :

लोकेशन : पटना से 32 कि.मी. उत्तर, हाजीपुर स्टेशन से 3 कि.मी. दूर प्रसिद्ध नेपाली मंदिर के पास, गंगा व गंडक नदी के संगम पर स्थित विशालनाथ शिवमंदिर धार्मिक महत्व का स्थल है।

महत्व : 2006 में नवनिर्मित मंदिर में विशाल प्राचीन शिवलिंग स्थापित है। जिसकी उँचाई 33 इंच व आधार 20 इंच है। 60–70 दशक में इस स्थल से खनन में यह विशाल शिवलिंग मिला था जो यहां 5 फीट नीचे जमीन में स्थापित था। नवनिर्मित मंदिर में इस शिवलिंग को उसी स्थान पर उपर उठाकर स्थापित किया गया है। मंदिर में शिवलिंग के अलावा

शिव परिवार की अन्य मूर्तियां भी स्थापित है। बिहार के प्रमुख शिवमंदिरों में इसका भी स्थान है। नेपाली मंदिर परिसर के निकट होने के बावजूद इस मंदिर की महत्ता उपेक्षित है।

चौमुखी महादेव :

लोकेशन : जिला मुख्यालय हाजीपुर से 30 कि.मी. दूर, महावीर जन्म स्थली के 1 कि.मी. दक्षिण, वैशाली के कमम्मन छपरा गांव में गुप्तकालीन (320 ई. – 550 ई. तक) चार दिशा में चार मुंहवाली चौमुखी महादेव शिवलिंग प्रसिद्ध धर्मिक स्थल है।

महत्व : स्लेटी पत्थर से बने, इस मूर्ति का व्यास 6.4 फीट और मूर्ति की उँचाई 60 इंच (जिसमें मूर्ति 40 इंच व आधार 20 इंच है), मूर्ति के आधार का व्यास 17 फीट है। जमीन के उपर दो चक्र और पांच चक्र जमीन के नीचे स्थापित है। प्रथम दो चक्रों के बीच गुप्तकालीन (4थी–6ठी सदी ईसा) अभिलेख उत्कीर्ण है। शेष 6 चक्रों के बीच अभिलेख उत्कीर्ण है या नहीं – इसके अण्वेषण से महत्वपूर्ण तथ्य मिलने का प्रबल संभावना है। हाजीपुर के तत्कालीन अनुमंडल पदाधिकारी जगदीश चन्द्र माथुर के प्रयास से वर्ष 1945 में उक्त स्थल की खुदाई में 'चौमुखी महादेव की प्रतिमा' मिली थी। इस स्थान की पुनः दूसरी बार वर्ष 1974 में खुदाई हुई थी, जिसमें मंदिर के भग्नावेश मिले थे, जिसके उपर नवनिर्मित मंदिर है। यहां लोक दर्शन के लिए दूर–दूर से आते हैं।

रामजानकी मंदिर ;हरिकटोराद्ध :

लोकेशन : वैशाली मुख्यालय हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर वैशाली थाना – बनिया, बसाढ़ गांव स्थित रामजानकी मंदिर – धार्मिक महत्व का स्थल है।

महत्व : मंदिर में 'रामजानकी' व 'शंकर पार्वती' की मूर्ति स्थापित है। मुख्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर 48.5 इंच उँची व 45.5 इंच व्यास की भगवान कार्तिकेय की गुप्तकालीन (4थी–6ठी सदी ई.) मूर्ति स्थापित है। बगल में स्थित 'राजा विशाल के गढ़' के उत्खनन के क्रम में, यह दुलर्भ मूर्ति मिली थी। भगवान कार्तिकेय की मूर्ति देश के बहुत कम स्थानों पर अस्तित्व में है। कार्तिकेय भगवान शिव के पुत्र व देवताओं की सेना के महासेनापति थे। प्राचीन काल में यह स्थल 'हरिकोटा' के नाम से जाना जाता था। आस्था है कि भगवान राम व लक्ष्मण ने विश्वामित्रा ऋषि के साथ जनकपुर जाने के क्रम में इस स्थल पर रात्रि विश्राम किया था। इस स्थान पर उनलोगों का कटोरा (भोजन पात्र) छूट गया था – जिसके कारण इस स्थल का नामकरण 'हरिकटोरा' पड़ा। जहां कटोरा छूटा था वहां वर्तमान में एक पोखर है।

चेचरघाट मंदिर :

लोकेशन : वैशाली मुख्यालय हाजीपुर से 35 कि.मी. दूर वैशाली थाना – बनिया, बसाढ़ गांव स्थित रामजानकी मंदिर – धार्मिक महत्व का स्थल है।

महत्व : चेचरघाट मंदिर परिसर 'जगेश्वर धाम' के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर परिसर में सड़क से उत्तर रामचन्द्रजी का मंदिर व सड़क से दक्षिण शिवमंदिर और दुर्गामंदिर स्थापित है। इस स्थल पर 'बौद्ध मंदिर' भी दर्शनीय है। परिसर में मंदिर के भीतर व बाहर 'दुर्लभ मूर्तियां' संगृहीत है। इस पवित्र स्थल का पौराणिक महत्व है। गुप्तकाल (320 ई.–550 ई.) में सम्राट हर्षवर्धन की बहन राज–राजेश्वरी ने इस स्थल पर (प्राचीन श्वेतपुर में) सीता मंदिर व शिवलिंग की स्थापना करायी थी। इसकी पुष्टि प्रसिद्ध बाणभट्ट ने भी की है। बाद में मुस्लिमकाल में 'सैयद अली खां' ने इस स्थल का नवनिर्माण कर रामचन्द्र मंदिर में सीता–राम, लक्ष्मण आदि भाईयों व हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना की। इसी मंदिर में एक मुस्लिम विद्वान ने रामायण का फारसी में अनुवाद किया था जो आज चेचर म्युजियम में संगृहित है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

प्रस्तुत शोध पत्र वैशाली जिले में पर्यटन की संभावनाओं की तलाश के लिए किया गया है। वैशाली जिला अति प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मावलम्बियों के लिए विशिष्ट स्थान रहा है। ऐतिहासिक विशिष्टता एवं विभिन्न धर्मावलम्बियों के लिए विशिष्ट स्थान के कारण पर्यटन क्षेत्र में वैशाली जिले में असीम संभावना है।

संदर्भ

[1] अनिल कुमार ;1995द्ध ''बिहार का भूगोल'', नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।
[2] बंसल, सुरेश चन्द्र ;1998द्ध ''भारत का भूगोल'', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
[3] Website (www. Vaishali.nic.in)
[4] www.vaishali.bih.nic.in
[5] http://www.indianmirror.com/tourism/vaishali.html
[6] http://buddhistcircuitbihar.com/vaishali1.htm